ईश्वर के घर की नींव उसका नाम है

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

हम कभी भी ईश्वर के घर और उसके नाम को अलग नहीं कर सकते। ये दोनों हमेशा साथ रहते हैं।

लेकिन जब ईश्वर का घर उस रूप में बदल जाता है — जैसे “पादरी के नाम का घर”, “भविष्यवक्ता के नाम का घर”, “अभिषेक तेल का घर” या “अभिषेक के नमक का घर” — तब यह वास्तव में ईश्वर का घर नहीं रह जाता, बल्कि डाकुओं का अड्डा बन जाता है। जैसा लिखित है:

“क्या यह भवन, जो मेरा नाम लेता है, तुम्हारी दृष्टि में
डाकुओं की गुफा हो गया है? देखो, मैंने स्वयं इस सब को देखा
है, यह यहोवा की वाणी है।” – यिर्मयाह 7:11

जब हम अपने जीवन में प्रभु यीशु के नाम का सम्मान नहीं करते, और उसके घर में उसकी जगह किसी भविष्यवक्ता, पादरी, प्रेरित या किसी मनुष्य का नाम रखते हैं — तब उस ईश्वर की उपस्थिति वहाँ नहीं है, जिसे हम आमंत्रित कर रहे हैं।

जब हम चर्च से प्रभु यीशु के नाम को हटा लेते हैं और हर मोड़ पर अभिषेक तेल को ऐसा इस्तेमाल करते हैं कि वह उस नाम का स्थान ले रहा हो… तब हम वास्तव में ईश्वर को बाहर कर देते हैं और एक अन्य “देवता” स्थापित कर देते हैं — जो शैतान है। जब हम यीशु के नाम

ईश्वर के घर की नींव उसका नाम है

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

का छोड़‑ना शुरू करते हैं और हर समस्या में नमक या मिट्टी जैसे प्रतीकक तत्वों को उसके स्थान पर प्रयोग करने लगते हैं… तब ईश्वर वहाँ नहीं है, और हम अकेले हो जाते हैं।

जब हम प्रभु यीशु के नाम से प्रार्थना करना छोड़ देते हैं और मूर्तियों या प्रतीकों की ओर प्रार्थना करने लगते हैं — यह बहुत बड़ी घृणा है।

“यहूदा का लोग मेरे नेत्रों में बुराई कर चुके हैं,
यहोवा कहता है। उन्होंने उस भवन में, जो मेरा नाम लेता है,
अपनी घृणित मूर्तियाँ लगा दीं और उसे अपवित्र कर दिया।” – यिर्मयाह 7:30

एक ईसाई या उपदेशक के रूप में — कभी भी प्रभु यीशु के नाम को उसके घर से अलग मत करें! उसका घर इस लिए बनाया गया था कि उसके नाम का वास वहाँ सनातन रूप में हो। ऐसा कोई क्षण नहीं जब यीशु का नाम चर्च में “समाप्त” हो जाए — ऐसा समय कभी नहीं होने वाला।

इन अंतिम दिनों में शैतान एक भयंकर मिथ्या फैला रहा है: “यीशु के नाम के दिन खत्म हो गए हैं!” वह आपको यह विश्वास दिलाना चाहता है कि यीशु का नाम अब प्रभावहीन हो गया है और हम उसे नहीं प्रयोग

ईश्वर के घर की नींव उसका नाम है

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

करते। लेकिन यह पूरी तरह से विरोधी की धोखा है। यीशु का नाम इसे‑हमेशा‑उसका‑घर‑में बुलाया जाना चाहिए।

“और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के
नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।” – प्रेरितों के काम 4:12
“और जो कुछ भी तुम करते हो — शब्दों में या कर्मों में — सब
कुछ प्रभु यीशु के नाम पर करो, और उसके
द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।” – कुलुस्सियों के
नाम पत्र 3:17

समापन में: यीशु का नाम परमेश्वर की सच्ची चर्च की आधारशिला है। अगर उस नाम का उल्लेख न हो, न उपयोग हो — तो वहाँ न तो स्वर्ग का ईश्वर प्रकट है, बल्कि एक अन्य आत्मा है — शत्रु की आत्मा।

कुछ अन्य शास्त्रवचन जो यह पुष्ट करते हैं कि ईश्वर का घर हमेशा उसके नाम को धारण करने के लिए बनाया गया था:

2 शमूएल 7:13 – “वह मेरा नाम के लिये घर बनाएगा, और मैं उसके राज्य के सिंहासन
को सनातन समय तक स्थापित करूँगा।”
1 किंग्स 8:18‑19 – “…परमेश्वर ने मेरे पिता दाऊद से कहा: ‘तुमने अच्छा सोचा कि तुम मेरे नाम के लिए मंदिर बनाना चाहते थे। परन्तु वह मंदिर तुम नहीं बनाओगे; बल्कि तुम्हारा पुत्र … मेरे नाम के लिए मंदिर बनाएगा।’”
2 इतिहास 7:16 – “मैंने इस मंदिर का चयन किया और इसे पवित्र किया ताकि मेरा नाम

ईश्वर के घर की नींव उसका नाम है

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

वहाँ सनातन तक रहे। मेरी आँखें और मेरा हृदय वहाँ सदा रहे।”

क्या आपने यीशु को अपने जीवन का प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार किया है? जानिए, हम उस समय में हैं जहाँ मानव‑पुत्र की वापसी निकट है, और अंतिम न्याय का समय पास आ रहा है।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp